ऋग्वेद 2.14
(संसार में शासन और जीवन शैलि की योजना की प्राथमिकताएं)
वेदों की इस आधुनिक विज्ञान सम्मत दूरदर्षिता के आगे हम सब को नत मस्तक होना पड़ता है |

1. **सूक्त का विषय - देवता:-**   इन्द्र: = जन कल्याण हेतु मेधावी कर्मठ सदैव विजयी उत्साहपूर्ण क्रियाशील जीवन शैलि की योजना ।

2. **ऋषि: =**   गृत्समद (आङ्गिरस: शौनहोत्र: पश्चाद्) भार्गव: शौनक: , प्रथम में भार्गव: शौनक: था , भार्गव: भृगु पुत्र होने से भार्गव कहलाया था अर्थात खूब तपस्वी था, और 'शौनक:' = (शुन् गतौ) खूब क्रिया शील था . जो पश्चाद् बना, गृत्समद: = 'गृणाति इति गृत्स:' 'माद्यतीति मद:'=प्रभु की स्तुति करता है, सदैव प्रसन्न रहता है ।आंगिरस=अंगों की शक्ति से सम्पन्न है, । शौनहोत्र: = (शौनं सुखं जुहोति) लोक सुख के लिए अपने सुख की आहुति देता है ।

1. सर्वोच्च प्राथमिकता
उत्तम शिक्षा व्यवस्था

(महर्षि दयानंद अन्वार्थ आधारित) **समाज में 'सोम' के विस्तार प्रसार के लिए उच्चतम शिक्षा प्राप्त कराने हेतु गुरुकुल,उत्तम शिक्षक गण और अनुसंधान की सुविधाएं उपलब्ध कराओ.**

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोमममात्रेभि: सिञ्चता मद्यमन्ध: ।

कामी हि वीर: सदमस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिदेष वष्टि ।। 2.14.1.

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) अपने को यज्ञ कर्म की चाहना करने वाले मनुष्यो **राष्ट्राध्यक्ष** ! तुम जो (एष:)यह (कामी) कामना करने के स्वभाव वाला (वीर:) वीर (वृष्णे) बल बढ़ाने के लिए (अस्य) इस सोम रस के (पीतिम्) पान को (वष्टि) चाहता है,(तत् इत्) उसे (सदम्) पाने योग्य सोम (हि) को निश्चय से तुम (जुहोत) ग्रहण करो (इन्द्राय) और परमैश्वर्य के लिए (अमत्रेभि:) उत्तम पात्रों से (मद्यम्) हर्ष देने वाले (अन्ध:) अन्न को तथा (सोमम्) सोम रस को (सिञ्चत) सींचो और बल को (आ, भरत) पुष्ट करो ॥1॥

1.हे राष्ट्राध्यक्ष ! समाज में परमैश्वर्य, अन्न, सुख साधनो,बल पौरुष की कामना करने के स्वभाव की वृद्धि की के लिए , सर्व प्रथम सब को समान उत्तम शिक्षा प्राप्त कराने और उस के लिए उत्तम शिक्षक तैयार करने तथा अनुसंधान की व्यवस्था करो |

(समस्त समाज को शिक्षित करने और वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रगति से समाज को समुन्नत शोषण मुक्त बना कर विश्व का कल्याण हो सकता है |)

द्वितीय प्राथमिकता

उत्तम जल संरक्षण नीति

1. अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जघानाशन्येव वृक्षम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशायँ एष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य ।। 2.14.2

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) अपने को अहिंसा की इच्छा करने वालो ! (य:) जो सूर्य (वव्रिवांसं) आवरणकरने वाले (वृत्रम्) मेघ को (अशन्येव) बिजुली के समान(वृक्षम्) वृक्षको (जघान) मारता है अर्थात दहशक्ति से भस्मकरदेता है और (आप:) जलों को वर्षाता तथा जो (एष:) यह (इन्द्र:) ऐश्वर्यवान्जन (अस्य) सोमलतादि रस के (पीतिम्) पीने को (अर्हति) योग्य होता है इस कारण (तद्वशाय) उन उन पदार्थों को कामना करनेवाले के लिए (यतम्) उक्त पदार्थ द्रव को धारण करो अर्थात् उन के गुणों को अपने मन में निश्चित करो ॥2॥

वर्षा के जल सब से उत्तम जल होता है. इस के संग्रह और समस्त जल के सदुपयोग की व्यवस्था द्वारा जैविक कृषि की उत्तम व्यवस्था करो |

(आज शुद्ध पेय जल तो अब भारत वर्ष के नागरिकों कहीं भी उपलब्ध नहीं होता | सब को RO इत्यादि का सहारा लेना पड़ रहा है | राजधानी दिल्ली तक में सधारण स्वच्छ जल सब क्षेत्रों मे नहीं मिलता | स्वच्छ जल का सब को उपलब्ध कराना आज

समस्त विश्व की सब से बड़ी समस्या है | समस्त जल के साधनों का संरक्षण और सदुपयोग, व्यवहार में जल ठीक उपयोग करना ही आज विश्व की सब से बड़ी समस्या है | वर्षा का प्राकृतिक जल ही सब से उत्तम शुद्ध जल होता है | प्रकृति की अमूल्य इस देन का सदुपयोग न कर पाना आधुनिक मानव का सब से बड़ा दुर्भाग्य है | वर्षा का जितना जल पश्चिमी तट अरब सागर और पूर्वी तट बंगाल की खाड़ी में चला जाता है उस के मात्र 5% से ही समस्त भारतवर्ष कि पेय जल की आवश्यकता पूरी की जा सकती है |

तृतीय प्राथमिकता (Ozone Layer)

पर्यावरण संरक्षण वन सम्पदा सात्विक जीवन शैली का महत्व

अध्वर्यवो यो दृभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं व: ।
तस्मा एतमन्तरिक्षे न वातमिन्द्रं सोमैरोर्णत जूर्ण वस्त्रै: ।। 2.14.3

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) यज्ञ संपादन करने वाले जनों ! (य:) जो (दृभीकम्) भयङ्कर प्राणी को (जघान्) मारता है किस को कि (य:) जो (गा:) गौओं को (उदाजत्) विविधप्रकार से फैंके अर्थात उठाय उठाय पटके और मारे और (बलम्) बल को (अप, व:) अपवरण करें रोकें (तस्मै) उस के लिए (हि) ही (एतम्) इस यज्ञ को (अन्तरिक्षे) अन्तरिक्ष में (वातम्) पवन के (न) समान वा(इन्द्रम्) मेघों के धारण करने वाले सूर्य को (वस्त्रै:) वस्त्रों से (जू:) बुड्ढे के(न) समान(सोमै:) ओषधियों वा ऐश्वर्यों से (आ, उर्णुत्) | is आच्छादित करो अर्थात् अपने यज्ञ धूम से सूर्य को ढापो.

हमारी पृथ्वी पर एक पुराने वस्त्र का आवरण है,(यह आवरण घने बादलों जैसा होता है. इस मे छिद्र नहीं होने चाहियें , यह नीचे दिए चित्र से स्पष्ट हो जाएगा) इस आवरण के द्वारा हि पृथ्वी पर ओषधि वनस्पति अन्न इत्यादि उत्पन्न हो पाते हैं। परंतु इस आवरण के छिद्रो के कारण अंतरिक्ष मे पवन और मेघों द्वारा ऐसे विनाशकारी बलशाली उत्पात होते है जो गौओं और सब नगरीय व्यवस्थाओं को बार बार उठा उठा कर पटक देते हैं इस आवरण के छिद्रों को यज्ञादि कार्यों से ढको. (वेदो का स्पष्ट संकेत सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं की ओर है, जो पर्यावरण के संरक्षण पर ध्यान न देने के कारण विश्वस्तर पर जलवायु का तपमान बढने से उत्पन्न हो रहा है।)

The importance of Ozone layer is also given by Rig Ved mantra 1.164.14

“

सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा ।। 1.164.14 b,AV9.9.14b

(सूर्यस्य चक्षु:) सूर्य का प्रकाश (रजसा) द्युलोक और पृथिवी लोक के मध्य में स्थित अंतरिक्ष लोक से (आवृतम्) आवृत हो कर पहुंचता है | इस प्रकार हम प्रचण्ड किरणों से झुलस नहीं जाते | (तस्मिन) इस रज: आवृत सूर्य प्रकाश से ही (विश्वाभुवनानि) सब प्राणी (आर्पिता) अर्पित हैं | यदि यह आता ही नहीं तो जीवन असम्भव होता | (पं०हरिशरण सिद्धांतालङ्कार भाष्याधारित)

ओज़ोन आवरण के छिद्र को समझने के लिए चित्र

from “the secret life of GERMS” by Philip M. Tierno)

2. ओज़ोन आवरण के संरक्षण में वन सम्पदा और सात्विक जीवन शैलि का महत्व

Veda is clearly referring to the green house gases causing the damage to Ozone

अध्वर्यवो य उरणं जघान नव चख्वांसं नवतिं च बाहून् ।
यो अर्बुदमव नीचा बबाधे तमिन्द्र सोमस्य भृथे हिनोत ।। 2.14.4

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) सब के प्रिय चरणों को करने वाले विद्वानों ! तुम (य:) जो जन (उरुणम्) आच्छादन करने वाले (चख्वांसम्) मारने वाले के प्रति मारने वाले को (जघान्) मारे और (नव, नवितम्) न्यन्यानवे (बाहून्) बाहुओं के समान सहाय करने वालों को (च) भी मारे (य:) जो (अर्बुदम्) दश क्रोड़ (नीचा) नीचों को (अव, बबाधे) बिलोता है (तम्) उस (इन्द्रम्) बिजुलीके समान सेनापति को (सोमस्य) ऐश्वर्य के (भृथे) धारण करने माइं (हिनोत्) प्रेरणा देओ॥4॥

इस आच्छादन को क्षति पहुंचाने वाले सीमित श्रेणियों के तत्वों पर नियंत्रण करो ,तथा इस आवरण की सुरक्षा करने वाले असंख्य वनस्पतियों और व्यवस्थित सात्विक जीवन शैली की आवश्यकता को युद्ध स्तर पर एक कुशल सेनापति की तरह कार्यान्वित करो (वनसम्पदा का संरक्षण और वृक्षारोपण का महत्व और सात्विक जीवन शैली को अपना कर ही ऐसा होगा.) पर्यावरण में व्यवस्था ठीक होने से वर्षा यथा समय होगी, आंधी तूफान तंग नहीं करेंगे.

(सन 1913 में वैज्ञानिकों को इस बात का पता चला कि सृष्टि के आरम्भ में सूर्य क्ी किरणें पृथ्वी पर इतनी प्रचण्ड थीं कि कोइ कोइ भी जीव और वनस्पति उत्पन्ननहीं थे | समुद्रतल पर भयंकर ज्वालामुखियों के विस्फोट से आक्सीजन निकल कर आकाश की ओर जा रही थी | लगभग 13 किलोमीटर की उंचाइ पर इसाक्सीजन को सूर्य से आती हुइ किरणों में पराबैंगनी Ultraviolet से जब मिलना हुआ तब आक्सीजन का आयनीकरण ionization होने से आक्सीजन ओज़ोन बनने लगी. पृथ्वी से लगातार आक्सीजन के उठने और सूर्य की लगातार पराबैंगनी किरणों के सम्पर्क से पृथ्वी से

लगभग 13 किलोमीटर की ऊंचाइ पर एक ओज़ोन का भना बादल सा परत छाने लगा | इस ओज़ोन परत के कारण सूर्यके प्रचण्ड ऊष्ण ताप से पृथ्वी सुरक्षितहोने लगी| पृथ्वी का तापमान जन जीवनवंसपति की उत्पत्ति के अनुकूल हो जाने पर पृथ्वी पर जीवन सम्भव हो पाया | इस ओज़ोन परत का रखरखाव ही पृथ्वी पर तापमान को सुव्यवस्थित रखताहै | ओज़ोन परत को क्षति पहुंचाने वाले तत्व यद्यपि कुछ गिने चुने ही हैं जैसे Carbon dioxide, Methane, Carbon monoxide- Car /diesel exhausts, chloro floro carbon gases,etc. परंतु ओज़ोन परत का संरक्षण करने के किए असन्ख्य वृक्षों और वनोंकी हरियाली की आवश्यकता होती है | ओज़ोन परत के फते टूटे छिद्रों के कारण पृथ्वी पर किसी किसी क्षेत्र में स्थानीय दृष्टि से भीषण तापमान की वृद्धिके परिणाम स्वरूप प्रलयंकारी भारीसमुद्री तूफान और बादल फटने जैसी भयन्कर भारी वृष्टि से बड़ी बड़ी भयंकर बाढ़ इत्यादि प्राकृतिकि आपदाएं झेलनी पड़ रही हैं | यह कितना विस्मय कारी है कि वेदों में ऋषियों ने सहस्रों वर्ष पूर्व यह ज्ञान मनुष्य को प्रदान किया था | आज यदि मानव समाज की यह दुर्दशा है तो इसी लिएकि हम ने वेद पढ़ना और समझना छोड़ दिया |)

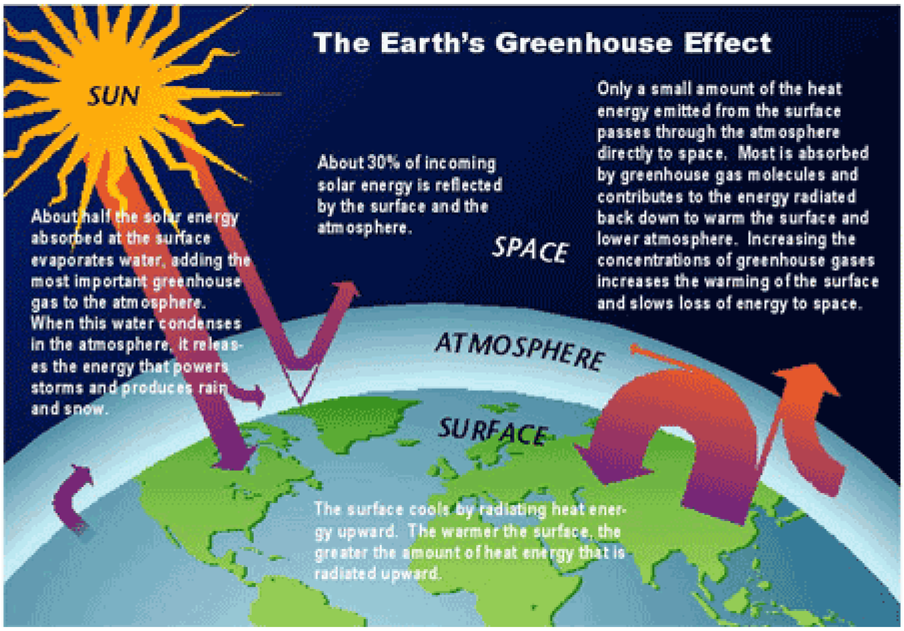

Agents causing damage to Ozone layer (limited in No) This is shown in the diagram below.

ओज़ोन आवरण नष्ट करने वाले भिन्न भिन्न श्रेणी के कार्य. (गिनती मे कम हैं) जैसा इस मानचित्र मे दिखाया गया है.

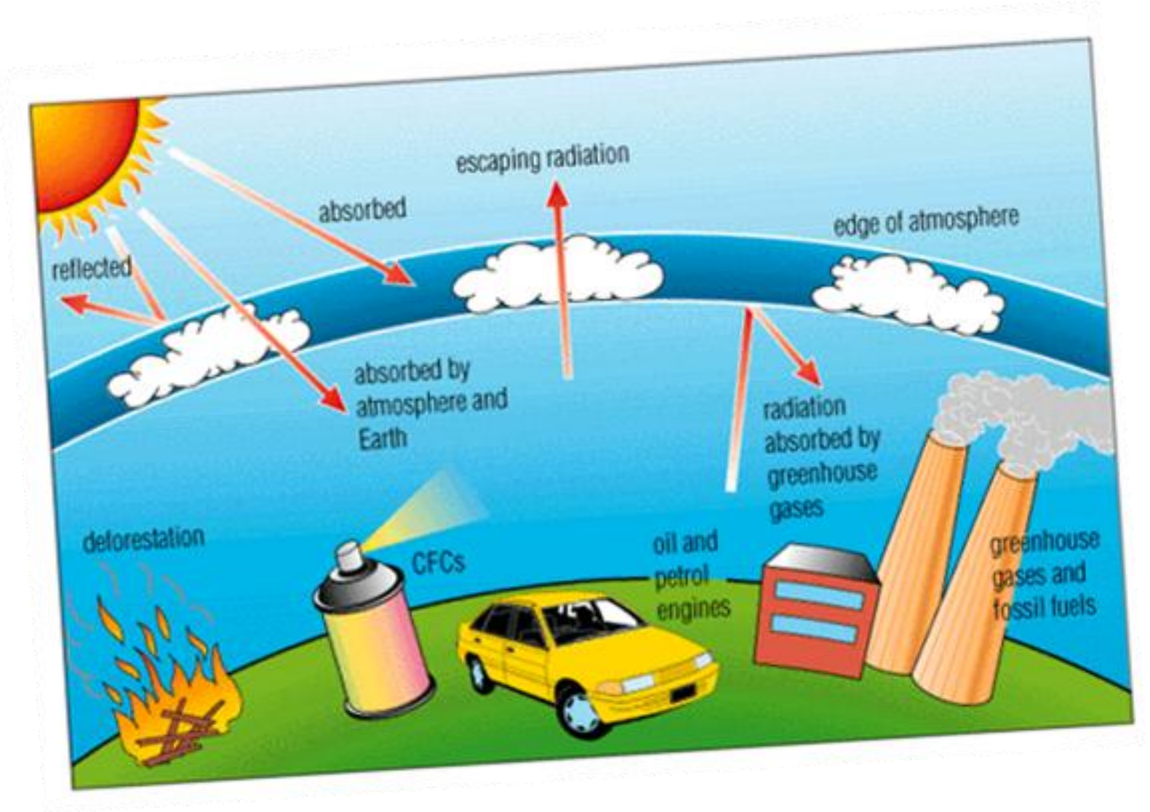

ओज़ोन आवरण की रक्षा करने वाले असंख्य स्वप्रेरित वनस्पति वृक्षारोपण से ले कर सादा जीवनशैलि कितने असंख्य हैं । जैसा इस मानचित्र से दिखाया गया है.

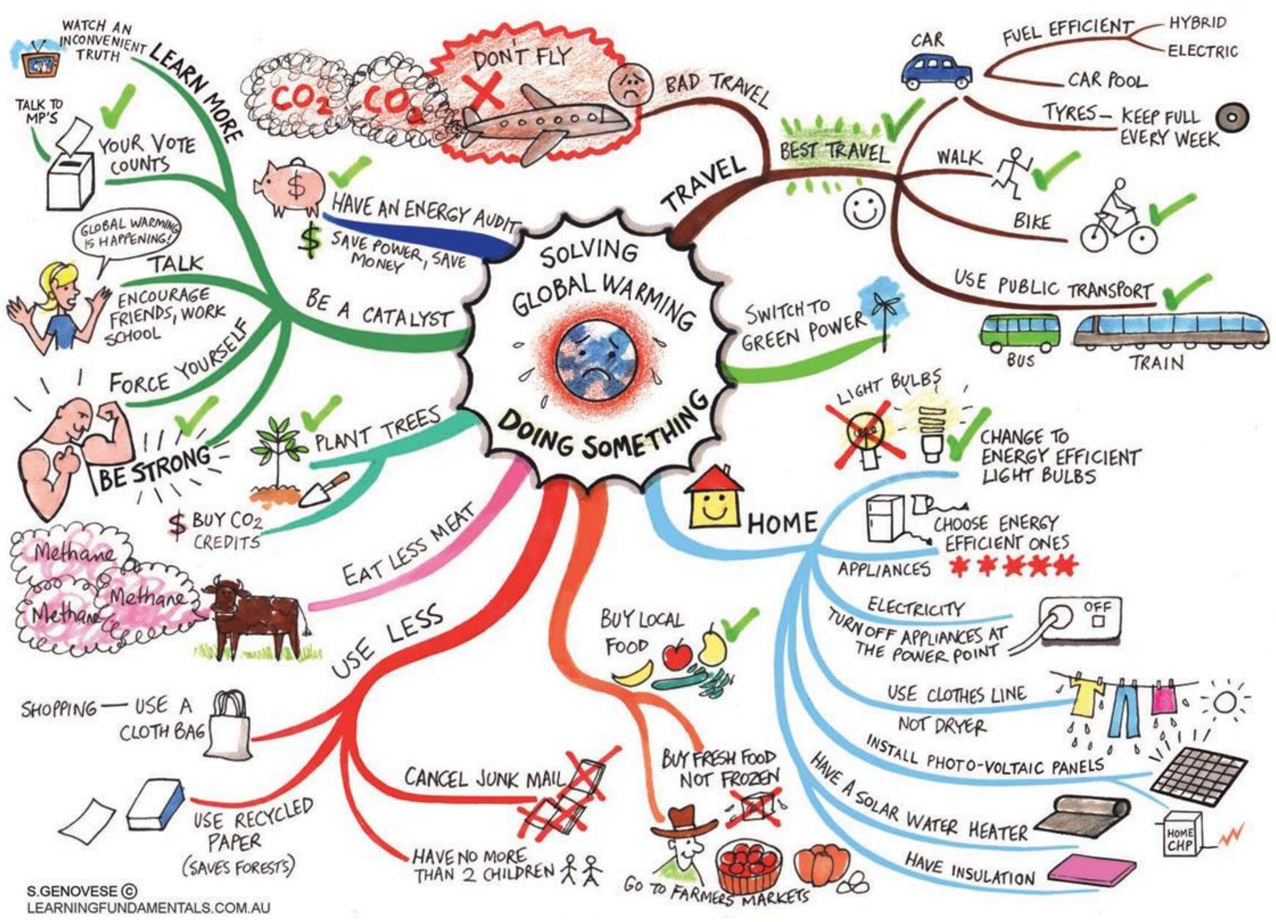

3. जमाखोरों काले धन के व्यापारियों ,भ्रष्ट तत्वों को नष्ट कर के
दरिद्रता दुर्भिक्ष से मुक्त समाज स्थापित करो

अध्वर्यवो य: स्वश्नं जघान य: शुष्णमशुषं यो व्यंसम् ।

य: पिप्रुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहोत ।। 2.14.5

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) अपने को यज्ञ कर्म की चाहना करने वाले वा) सब के प्रिय चरणों को करने वालो ! तुम (य:) जो जन सूर्य जैसे(स्वश्णम्) सुन्दर मेघ को वैसे शत्रु को (जघान्) मारता है वा (य:) जो (शुष्णम्) सूखे पदार्थ को (अशुषम्) गीला वा (य:) जो (व्यंसम्) शत्रु को निर्भुज करता वा (य:) जो (नमुचिम्) अधर्मात्मा (पिप्रुम्) प्रजापालक अर्थात् राजाको वा (य:) जो (रुधिक्राम्) राज्य व्यवहारो को रोकने वलों को निरन्तर गिराता है (तस्मै) उस (इन्द्राय) सूर्य के समान सेनापति के लिये (अन्धस:)अन्न (जुहोत्) देओ ॥5॥

पिप्रुम वे स्वार्थी जन जो केवल अपना ही पेट भरते हैं , और नमुचि – कर न देने वाला,दुर्भिक्ष कालिक मेघ के समान प्रजा के निमित्त कुछ भी सुख न देने वाला क्षमाके अयोग्य होते हैं । उन्हें किसी भी अवस्थामें (रुधिक्रा) राज्य शासन दण्ड व्यवस्था द्वारा क्षमा नहीं करना चाहिए.

पर्यावरण सुरक्षा व्यवस्था की स्थिर नीति

Environment protection to be permanent strategy

अध्वर्यवो य: शतं शम्बरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वी:।
यो वर्चिन: शतमिन्द्रो सहस्रमवावपद् भरता सोममस्मै ।। 2.14.6

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे (अध्वर्यव:) युद्धरूप यज्ञ को सिद्ध करने वालो ! तुम लोगों में से (य:) जो (शम्बर्स्य) जिस से स्वीकार किया जाता उस मेघ के (शतम्) सौ (पुर:) पुरों को जैसे घोड़ों को (अश्मनैव:) पत्थर से वैसे (विभेद) छिन्न भिन्न करता है (य:) जो (इन्द्र:) ऐश्वर्यवान् (वर्चिन्:) प्रदीप्त अपने सर्व बल से दैदीप्यमान राजा के (शतम्) सौ और (सहस्रम्) हज़ार (पूर्वी:) पहले हुइ प्रजाओं को (अपावपत्) नीचा करता है (अस्मै) इस सेनेश के लिए (सोमम्) ऐश्वर्यको (भरत) धारण करो ॥6॥

(प्राकृतिक) आपदाओं को युद्ध स्तर पर रोकने के प्रबंध करने वाले जनों (वन सम्पदा और सात्विक जीवन शैली यज्ञ व्यवस्था से) पृथ्वी पर जीवन को सम्भव बनाने में जो सुदूरभूत काल में ओज़ोन आवरण का जो महत्व था उसे अपने जीवन को ऐश्वर्य मय बनाए रखने के लिए सदेव अपने ध्यान में रखो।

4. सातवीं प्राथमिकता. 7th Priority

खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता

अध्वर्यवो य: शतमा सहस्त्रं भूम्या उपस्थेऽवपज्जघन्वान् ।
कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान् न्यावृणग् भरता सोममस्मै ।। 2.14.7

महर्षि दयानंद पदार्थ- हे (अध्वर्यव:) युद्धयज्ञरूप सिद्धि के कर्ने वाले जनों ! तुम (य:) जो सूर्य के समान(भूम्या:) भूमि के (उपस्थे) ऊपर (शतम्) सेंकड़ों वा (सहस्रम्) सहस्रों वीरों को (आ, अपवत्) बोता अर्थात गिरा देता दुष्टों को(जघन्वान्)मारता वा(अतिथिग्वस्य) अतिथियों को प्राप्त होने वाले (आयो:) और प्राप्त हुए (कुत्सस्य) बाण आदि फैंकने वाले प्रजापति के (वीरान्) शत्रु बलों को व्याप्त होते वीरों को (नि,आवृणक्) निरंतर वर्जता है (अस्मै) इस के लिए (सोमम्) ऐश्वर्य को (भरत) पुष्टकरो ॥7॥

कृषक एक योद्धा के समान उर्वरक भूमि में जो अन्नोत्पादन के लिए प्रयत्न करता है, उसे सहस्रों खड़ पतवार, कीटाणु इत्यादि शत्रु नष्ट करने के प्रयास करते हैं. इन से निपटने के लिए उत्तम वीर स्थापित करो.

(इस विषय को जैविक खेती में अत्यंतमहत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है.गौ माता के गोबर मूत्र इत्यादि से भूमि मे कृषि उत्पादन और जैविक खड़ पतवार कीट नियंत्रण विषय एकीकृत (समन्वित) कीट प्रबंधन के नाम से आधुनिक कृषि विज्ञान का एक महत्वपूर्ण अनुसंधान का काम है)

5. राज्य समृद्धि का जनहित में प्रयोग करो अपव्यय नहीं

Utilize Public savings in Nation’s welfare & avoid wasteful expenditure.

अध्वर्यवो यन्नर: कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तदिन्द्रे ।
गभस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत ।।2.14.8

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) सब का हित चाहने वाले (नर:) नायक मनुष्यो ! तुम (यत्) जिस राज्य या धन को (श्रुष्टी) शीघ्र (वहन्त:) प्राप्त करते हुए (कामयाध्वे)

उस की कामना करो (नशथ) वा छिपाओ (तत्) उस (गभस्तिपूतम्) किरणों वा बाहुओं से पवित्र करे हुए को (इन्द्रे) सभापति के निमित्त (भरत) धारण करो। हे (यज्यव:) सङ्ग करनेवाले जनों ! तुम (श्रुताय)जिस का प्रशंसित श्रुति विषय है उस (इन्द्राय)सभापति के लिये(सोमम्) ओषधियों के रस को वा ऐश्वर्य को (जुहोत्) ग्रहण करो ॥8॥

उद्यम द्वारा कामना कर के उपलब्ध राज्य की समृद्धि का संरक्षण करो . उस धन को जनहित में प्रशंसित योजनाओं मे प्रयोग करो . उस धन का अपव्यय मत करो।

9. प्रदूषित जलों का शुद्धीकरण

अध्वर्यव: कत्तर्ना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम् ।
जुषाणो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मदिरं जुहोत ।। 2.14.9

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) पुरुषार्थी जनों ! तुम (अस्मै) इस सभापति के लिये (वने) किरणों में (श्रुष्टिम्) शीघ्र (निपूतम्) निर न्तर पवित्र और दुर्गंध वा प्रमादपन से रहित पदार्थ (कर्त्तन) करो (वने) और किरणों में (उन्नयध्वम्) उत्कर्ष देओ जो (हस्त्यम्) हस्तों में उत्तम हुए पदार्थ को (जुषाण:) प्रीति करता वा सेवन करता हुआ (मदिरम्) आनन्द देने वाली (सोमम्) सोमलतादिरस को (अभि,वावशे) प्रत्यक्ष चाहता (तस्मै) उस सभापति के लिए और (व:) तुम लोगोंको (इ न्द्राय) ऐश्वर्यवान जन के लिए उक्त पदार्थ को (जुहोत्) देओ.॥9॥

वैज्ञानिक विद्वतजन दुर्गंधित प्रदूषित जलों को सूर्य की किरणों द्वारा, लताओं इत्यादि के द्वारा दुर्गंध रहित और प्रदूषणमुक्त करें.

इस विषय पर यजुर्वेद में निम्न विस्तृत उपदेश मिलता है. जो इस विषय को विस्तार पूर्वक बताता है.

"उपज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा । अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि

ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकावर्णं शिवं कृधि।। Yajurved 17।6।।

अग्ने पित्तं आपसि------ pitta and agni i.e. fever in water is

polluted water

मण्डूकि ताभिरागहि-----marine life like frogs & fish family,

get at that
उपज्मन्नुप वेतसेऽवतर नदीष्वा ----growing plants of cane reed
family which are secondary crops (crops not fit for direct human consumption, but use as biomass and if fit cattle fodder etc.) in the beds of streams of such water .
सा इमं अस्माभि यज्ञं पावकवर्णं शिव: भव -----may provide us
with means to purify the polluted water for our welfare.
Modern Science researches initiated by NASA in USA finally developed the most environments friendly process to treat pollutes waters called grey waters by process almost identical to what this Ved Mantra has prescribed. The grey water is fist led in to wet lands with plenty of marine life to digest the organic pollutants. Next this water is led in to lagoons in which reed family of plants purify this water by photo remediation, subsequently this water is led through lagoons with ‘energy crops’. These are special plant species that harvest specific variety of heavy metal pollutants like ‘Lead’, ‘Cadmium’ , mercury and Magnesium etc. These processes are shown in pictures given here.

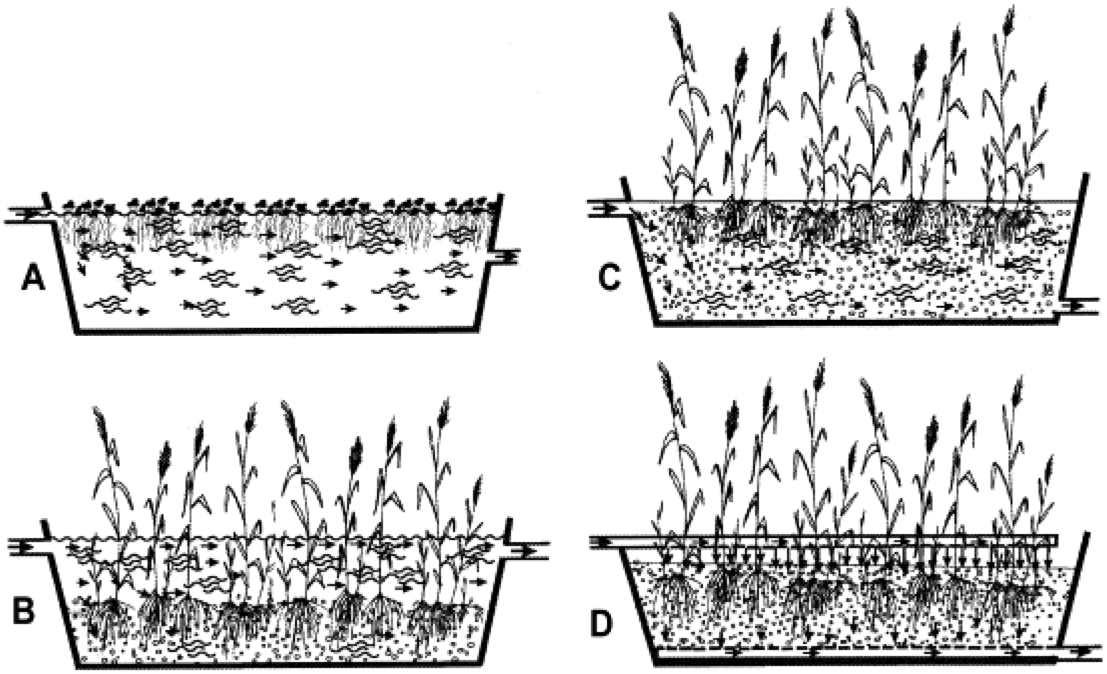
A
B
C
D

6. गो दुग्ध खाद्यान्न की पौष्टिकता

Probiotics and Prebiotics.

अध्वर्यव: पयसोधर्यथा गो: सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
वेदाहमस्य निभृतं म एतद् दित्सन्तं भूयो यजतश्चिकेत ।। 2.14.10

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:) बड़ी बड़ी ओषधियों को सिद्ध करने वाले जनो ! तुम (यथा) जैसे (गो:) गौ के (पयसा) दूध से (ऊध:) ऐन बरा होता है वैसे (सोमेभि:) खाई हुइ सोमादि ओषधियों के साथ (ईम्) जलको पी के (पृणत) तृप्त होवो जैसे (भोजम्) भोजन करनेवाले (इ न्द्रम्) ऐश्वर्यवानको (अहम्) मैं (व्द) जानूं (अस्य) इस की (निभृतम्) निश्चित पुष्टिको जानूं वैसे इस विषय को (भूय::) बार बार जो (चिकेत) जाने उस को तृप्त करो ॥10॥

वनस्पतियों ,ओषधियों और गो दुग्ध जल के पौष्टिक तत्वो को अनुसंधान द्वारा अधिक गुणों से परिपूर्ण करो. इन विषयों पर अनुसंधान अविरल गति से चलता रहे.

11. पारदर्शित धनोपार्जन और राज्य व्यवस्था

अध्वर्यवो यो दिव्यस्य वस्वो य: पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा ।
तमूर्दरं न पृणता यवेनेन्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु ।। 2.14.11

महर्षि दयानंद पदार्थ – हे! (अध्वर्यव:)राजसम्बन्धी विद्वानजनों ! (य:) जो (दिव्यस्य) प्रकाश में उत्पन्न हुए (वस्व:) धन को वा (य:) जो (पार्थिवस्य) पृथिवी मे विदित (क्षम्यस्य) सहनशीलता में उत्तम उस के बीच (व:) तुम्हारे लिए (राजा) राजा (अस्तु) हो. (तम्) उस (इन्द्रम्) ऐश्वर्यवान को (यवेन्) यव अन्न से जैसे(ऊर्दरम्) मटका को वा डिहरा को (न) वैसे) (सोमेभि:) सोमादि ओषधियों से पृणत) पूरो परि पूर्ण करो (तत्) उस (अप:) कर्म को प्राप्त हू ॥11॥

प्रकृति से कृषि से जैविक अन्न से,ओषदि युक्त वनस्पतियों और सहनशीलता की शिक्षा का उपदेश ग्रहण करो. और पारदर्शिता से धनोपार्जन और राज्यकार्य द्वारा सब से बिना के बांटो.

12. इस प्रकार एक सम्पन्न वैभव शाली राष्ट्र निर्माण करो

अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राध: समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद्वदेम विदथे सुवीरा: ।। 2.14.12

हे (वसो) धन देने वाले (इन्द्र) परमैश्वर्ययुक्त ! (सुवीर:) सु न्दर वीरों वाले हम लोग जो (ते) तुम्हारा (बहु) बहुत (चित्रम्) अद्भुत (वसव्यम्) पृथिवी आदि वसुओंसेसिद्ध हुए (बृहत्) बहुत (राध:) समृद्धि करने वाले धन को (श्रवस्या:) अन्नों के लिए हित करने वाली पृथिवीके बीच (अनु द्यून्) प्रति दिन (विदथे) विज्ञान रूपी संग्राम यज्ञ में (वदेम) कहें उस को हमारे लिए देने को आप (समर्थयस्य) समर्थ करो ॥12॥

इस प्रकार एक अद्भुत वैभव शाली समाज का निर्माण करो